

# जिनपूजाविधि : मध्यकालीन विधान

सं. विजयशीलचन्द्रसूरि

केटलाक वर्खत पहेलां मुनि श्रीभुवनचन्द्रजीने मांडलना भंडारमांथी एक चोपडो (गुटको) जोवा मळेलो; तेमांना अमुक पृष्ठेनी झेरोक्स करावी तेमणे मने मोकलेल, तेमां आ ‘जिनपूजाविधि’ छे. तेमना लखवा प्रमाणे आ गुटको श्रीहीरविजयसूरिजीना निकटना साधु वा श्रावकनो होवो जोईए. अने तेम होय तो आ लखाणनुं मूल्य घणुंबधुं आंकवुं जोईए, केमके ते १७मा शतकना चलणी विधाननुं लखाण गणाय.

आ लखाणमां आम तो जिनप्रतिमानी पूजानो विधि अने क्रम आपवामां आव्यो छे. पूजाविधि आम तो प्रचलित ज छे. परंतु प्रचलित विधिमां केटलुंक एकुं प्रवेशी गयुं छे, जे आ विधिमां जोवा नथी मळतुं. एवी वातो तरफ ध्यान दोखाना अभिप्रायथी ज आ लखाण अन्वे प्रकट करवामा आवे छे.

१. स्थान पूर्वाभिमुख बेसीने करवानुं छे, ते पण जीव विनानी-निर्जीव धरती पर धोतीयुं-वस्त्र पहेरवानी किया उत्तर दिशा भणी ऊभा रही करवानी छे. साथे वस्त्रनी संख्या अने स्वरूप पण लख्यां छे.
२. देगसरमां दाखल थईए त्यारे पहेलो जमणो पग अंदर मूकवो - ए सूचन ध्यानपात्र छे.
३. प्रदक्षिणा परिवार सहित, बाजते गाजते, नीची नजेरे, सृष्टिकमे करवानुं विधान मळे छे, जे सुझो माटे उपयोगी गणाय. विधिविधानमां केटलीक क्रियाना बे क्रम होय छे : १. सृष्टिकम; २. संहारकम. उत्तम अने पोषक-विधायक क्रिया सृष्टिकमे थाय. तेथी ऊलाय प्रकारनी किया अवलो-संहारकमे थाय. आ मंत्र-तंत्र शास्त्रनी रहस्यनी वात छे. प्रदक्षिणा, पूजा वर्गे उत्तम-पोषक-लाभकारक क्रिया छे, ते सृष्टिकमे ज थाय. प्रदक्षिणा देतां आजे सर्वत्र बोलाता दूहाना स्थाने ते वर्खते प्राकृत ३ गाथा बोलाती हती, तेनुं पण सूचन अही मळे छे. उपरांत, प्रदक्षिणा दई शकाय तेम न होय तो प्रभु आगळ ऊभा रही, हाथ जोडी आवर्त

- देतां देतां ३ गाथा बोलीने ते विधि साचवी लेवानुं सूचन पण करेल छे.
४. आ पछी देरासर पुंजवानुं एटले के झाडु, पुंजणी वगेरेथी साफ करवानुं छे, अने साथे साथे बीजां देरासरे (होय तो)नी चिन्ता (तेनी पूजानो प्रबंध करवानी चिन्ता) करवानी सूचना छे.
५. आ पछी ज सुखड-केसर घसवानुं छे, ते पण मुखकोश बांधीने ज. तेमांये पूजानुं तथा तिलक माटेनुं अलग करी मूकवानुं छे. पछी बधुं लईने गभारना दरवाजे जाय, त्यां आठपडो मुखकोश बांधीने ज अंदर जाय तेवुं सूचन छे.
६. अंगपूजाना आरंभे निर्माल्य-वासी फूल, केसर वगेरे उतारवानी वात छे. खोखुं उतारवानी वात नथी. पुराणां खोखां आज लगी क्यांय मळ्यां पण नथी. २००-४०० वर्ष जूनी आंगी मळे छे तेमां पण पाखर, हंस, मुगट, कुंडल, बाजुबंध, हार, श्रीफल आटलुं ज, वधुमां वधु, मळ्युं छे; आखुं के खंडशः धातुनुं खोखुं नहिज. पछी पखालनी वात आवे छे, एमां दूधनी वात आवती नथी. सुगम्धित पाणी अने तेमां सुखड-केसर-फूल त्रण वानानुं मिश्रण करवानी अने ते थकी प्रक्षाल करवानी सूचना छे. आमां दूध क्यांय नथी आवतुं. आजे तो दूधनी ज प्रधानता होय छे. दूध न होय तो प्रक्षाल अधूरो-विधिहीन मनाय छे. फलतः वासी, कोथली के फ्रीजनां दूधनो पण छोछ रह्यो नथी, ते नितान्त आशातना गणाय तेम छे. वळी, आ विधिमां जीवोनी जयणानी वात वरेवारे करी छे; ज्यारे दूधना के दूधमिश्रित पखालथी थती चीकाश, फूग, जीवोत्पत्ति, तेनाथी आकर्षाईने. आवती गरेळी, उंदर, वांदा वगेरेनो उपद्रव, ते बधानी पूजारी द्वारा थती हिंसा - आ बधानो विवेक आजना पूजा-प्रेरको तथा पूजा-कारको पासे जोवा मळतो नथी ज.
७. अंगलूहणांनी वात विगते समझवायोग्य छे. कुल ४ अंगलूहणां राखवां. बे आजे वापर्या, ते काले न वापरवां; काले बीजां बे वापरवां. एकेक अंगलूहणुं साडा त्रण गजना मापनुं लेवुं. तेने केसर सुखडनो पास आपी पीळां करवानां छे. वळी तेने सुगंधभर्या स्थाने राखवानी सूचना छे.
८. पखालनुं पाणी तथा निर्माल्यभूत बोजा पदार्थ भेगा न राखतां जुदा

- राखवानी सूचना छे. तेने निरबद्ध-निर्जीव जमीन पर परठवाय; त्यां कुंथवा जेवो जीवात उत्पन्न न थाय तेनी तथा वरसाद पडे तो फूग न वळे तेनी दरकार राखे; गमे तेम नाखे तो पाप लागे; ते पदार्थोंने ओळंगाय नहि; आ बधी वातो विवेकी माटे खूब प्रेरणादायी छे.
९. नव अंगोना कममां भाल, कंठ, हृदय, उदर- आ अंगोनो समावेश नथी. तेनुं कारण, अहीं बे पगने बे अंग, बे जानु, हाथ, खभाने पण २-२ अंग गणेल छे, ज्यारे अन्यत्र बे पग, जानु, हाथ, खभाने १-१ (संयुक्त) अंग गणेल होय छे, ते होवुं जोईए.
  १०. फूल पूजा पण सृष्टिक्रमे ज करवानो विधि नोंधपात्र छे; मन फाँवे तेम गमे ते अंगे फूल गोठववानां नथी. उपरांत, फूल केवां लेवां ने केवी रीते, ते अंगेना सूचन पण ध्यानाहं छे. आ वातो आजे कोण स्वीकारे-समजे छे ?
  ११. पहेलेथी कोईए पूजा करी लीधी होय तो ते दूर करवी अने आपणे नवेसरथी पूजा करवी, ते बाबतनो अहीं स्पष्ट निषेध थयो छे. घणाने ८ प्रकारी पूजानो नियम होय छे, तेओ पूर्वकृत पूजाने रद्द करी फरी बधुं करवाना जड आग्रही होय छे, तेमणे आ विवेक समजवा योग्य छे. पूजा करतां प्रतिमाना मुख पर सुखडनुं विलेपन करवानी मनाई पण फरमावाई छे.
  १२. अग्रपूजामां कयो पदार्थ भगवाननी कई बाजुए मुकवो तेनो विधि खूब महत्त्वपूर्ण छे. दीवो जमणे, धूप डाबे, अने नैवेद्य-फल-जलपात्र सन्मुख प्रतिमानी बराबर सामे धरवानुं विधान अहीं छे. साथियो-सिद्धशिलानुं विधान नथी; फक्त अक्षतनी ३ ढगलीओ ज करवानुं विधान छे; अने छेक छेवटे (अष्ट) मंगल चोखा वडे आलेखवानुं विधान छे. आजे केटलाक लोको अष्टद्रव्यपूजा पछी मात्र मंगलदीवो करे छे, आरतीनो निषेध करे छे. पण आ विधिमां आरती तथा मंगल दीवो बन्ने करवानुं स्पष्ट सूचन छे.
  १३. फलपूजा तो थईज छे, छतां छेवटे नाळियेर धरवानुं पण विधान छे. चंदनना थापा देवानुं पण विधान छे. बधुमां, देरासरमां पोते रह्यो, बेठो,

तेना निमित्ते (वल्लरस्ते ?) भंडार मूकवानुं एटले के भंडारमां नाणुं मूकवानुं विलक्षण विधान पण छे. आजे दरेक देरासरमां भंडार होय छे, ने तेमां पैसा नाखवानो रिवाज छे. वळी, ते पैसाने निर्माल्यपूजाद्रव्य तरीके गणावाय छे. वळी, आजे तो सर्वत्र साथियो वगोरे रखीने ते पर फलादिनी साथे पैसा मूकवानी तथा तेने स्वहस्ते भंडारमां नाखवानी प्रथा छे. ते प्रथानुं पगेऱुं पण अने तेनी अयोग्यता पण अहों आ विधान द्वारा जणाय छे.

खरेखर तो समग्र पूजाविधिमां धन के नाणुं मूकीने पूजा करवानुं क्यांय विधान ज नथी. बधे अष्ट द्रव्यो वगोरे द्वारा ज पूजा करवानी वात छे. अटले नाणुं पूजाद्रव्य (उपकरण) नहि, माटे ते निर्माल्य पण नथी थतुं. छतां भंडार छे, तथा नाणुं भरवानुं होय छे, ते शी रीते ? शा.माटे ? तेनी स्पष्टता आपणने आ विधिमांना ‘जेतलीवेला देहरमां रहीइ ते निमित्त भंडारि मूकीइं’ - ए वाक्यथी सांपडे छे.

१४. आ वाक्यना अनुसन्धानमां, आ ज विधिगत, एक बीजुं वाक्य पण पकडवानुं छे : “घणी वेला धोतीयां राखीइ नहीं, राखइ तु दोष लागि”। अर्थात् पूजानां वस्त्रो लांबो वखत पहेरी राखवामां दोष कह्यो छे. आजकाल कलाको लागी पूजाना कपडामां रहेवानी, पूजा उपरांत माळा, व्याख्यान, सामायिक, वहीवटी कार्य आ बधुं करवानी जे पद्धति चाले छे, ते सामे आ वाक्यो लालबत्तीरूप छे. सारांश ए के झाड्यो समय पूजाना कपडे रहेवाय नहि, ने ते कपडे देरासरमां जेटलो वखत रहे तेना चार्ज-वल्लरस्ते भंडारमां नाणुं नाखवानुं रहे.

१५. एक बीजी महत्त्वनी वात आ विधिमां वर्णवी छे. ते वात छे जलपूजानी. मूर्तिनी जूनी पूजा उतार्या बाद जे थाय छे तेने प्रक्षाल उपरांत अभिषेक गणवानो चाल आजे छे. आ विधिमां तेने प्रक्षाल ज गणावेल छे; ते पण प्रतिमाने स्वच्छ करवानी दृष्टिए ज. पछीथी दरेक ८ प्रकारी पूजा करवानी, तेमां जलपूजा पण करवानी छे ते भगवान सामे फल-नैवेद्यनी जेम अने तेनी साथे जलभरेलुं पात्र धरीने-मूकीने; नहि के प्रतिमाने न्हवडावीने. आ विधि शास्त्र ग्रंथेमां तो मळे ज छे, परंतु १७मा सैकामां

पण ते प्रचलित होवो जोईए (आजे तो छोडी देवायो छे) तेम आ विधिगत विधान वांचवाथी जणाई आवे छे.

प्रांते, आ विधिनी प्रति मारा पर मोकलती वखते लखेला पत्रमां मुनि श्रीभुवनचन्द्रजीए लखेल केटलाक मुद्दा नोंधुं तो -

“अष्टप्रकारीनो क्रम, नव अंग, अक्षत वगेरे अंगेनी ते वखतनी प्रणालिका कंइक जुदी ज छे. प. कल्याणविजयजीनी ‘जिनपूजापद्धति’नां केटलांक विधानोने समर्थन मळे तेवुं आमां घणुं छे.... प्रणालिका अने परंपराने शाश्वत जेवी समजी बेसनाराओना हाथमां आ मूकवा जेवुं छे.... अत्यारे जेम छे तेम पहेलां पण हतुं- अर्थात् हालनी विधि ‘सनातन’ छे एवी मान्यता बरोबर नथी.”

लेखनी भाषा मारुगुर्जर एटले के राजस्थानी (मारवाडी) मिश्रित गुजराती लागे छे. केटलाक शब्दोनो संग्रह छेवाडे आपेल छे.

#### —X—

पूजानी विधि लिखिइ छह । पूरवदिसि बड्सी अंघोति कीजि । भूमिका पुंजीनइ जीव काजि । पडे धोतीउं पहिरीइ । पगे भुई अणफरतु उत्तरदिसि साम्ह रही धोतीउं पहिरइ । अनि उत्तरासंग करि । ते धोतीआ श्वेत निर्मल चोखां । किरिडिआं नही । फाटा नही । साध्या नही । आंतरी सहित । पुरुष नइ २, स्त्री नइ ३ धोतीआं ॥

पहिलूं बारणि ‘निसिही’ कहइ । तेणी निसिहीइ मन वचन कायाइं करी घरनुं व्यापार निषेधाइं । मांहि पइसतां अभिगमन चारि करीइं - जिन पूजा व्यतिरेक सचित छांडीइं १, अचित वस्तु आभरणादिक राखीइं २, मननुं एकांतपणु करीइं ३, एकसाडिड उत्तरासंग करीइं ४ । पूजानु उपस्कर सर्व लेई जईइ । पहिलूं जिमणउ पग मांहि मुंकीइ । जगन्नाथनइ जिमणइ पासइ रहीइ । मूलनायकनुं मूख देखी माथि हाथ चडावी नमता थिका ‘नमो जिणाण’ कहीइ वार ३ । ए पांचमु अभिगमन साचवीइ ॥

पछंइ वाजित्र वाजतइ परिवार लेई सृष्टि प्रदक्षिणा ३ दीजइ । जगन्नाथना जिमणि पासाथी डावि पासि ऊतरीइ । तिहां “जयजंतु कप्पपायव०” ए त्रिणि गाथा भणीइ । नीचुं जोतां मनमाहि एहवुं चितवीइ ‘ज्ञान-दर्शन-

चारित्र आराधवानइ काजिइं वलि समोसरणि बिठा चिहुं रूपे तिहां देउं छू।' जउ प्रदक्षिणानुं राम न हुइं तु ऊभु रही हाथ फेरखतु गाथा ३ कहइ। पछइ देहरुं पूजइं। वली बीजा देहरानी चिंता करइं॥

मुखकोश बांधी सूकडि केसर घसि पूजानी अनि तिलकनी जूजूई ऊसारि पूजानु ऊपसकर सघलु लेई ऊभु थाइ। गभारानि बारणि जईनइ निसिही बीजो कहि। पंचांग प्रणाम करि वार ३ मस्तक भुइ लगाडइ। 'नमो जिणाण' कहइ। पछइ आठपुडु मुखकोश करि, जिम मुखनु सास अनि नासिकानुं सास प्रतिमानइ न लागइ॥

हवि अंगपूजा लिखीइ छइ। जगन्नाथनु निर्माल्य ऊतारीइ। पछि पुंजणीइ प्रतिमा पुंजीइ। जीवनी यतना कीजइ। पषालनि सुगंध पाणी करीइ। माहिं सूकडि केसर फूल मुंकी कलश भरीइ। पछइ प्रतिमा प्रनालीइ बाजोठि अथवा थाली ऊपरि ऊंची मुंकीइ। कलश बिहुं हाथि लेई-

बालतर्णमि सामिअ ! सुरगिरिसिहरंमि कणयकलसेहिं ।

तिअसासुरेहिं न्हविड ते धन्ना जेहि दिट्टो सि ॥

अथवा 'स्नातस्याऽ' गाथा एक मुखि ऊचरतु ढालि। पछइ वालाकूचीइ मइल यलि शुद्ध कीजि। तिह्वार पछी अंग लूहीइ। ते अंगलूहणा २ कीजि। ते अंगलूहणा सूकडि केसरि पीलां कीजइ। सुगंध ठामि मुकीइ। सुहाली भेरवना सष(प?)२ कीजि। एक दिनना अंगलूहणां बीजि दिनि वासी मूकीइ। एवं अंगलूहणा ४ कीजि। पषालपाणी निर्माल जूजूआ राखीइ, निरवद्य भूमिकाइं परठवीइं। उलंडाइं नही। तिहां कुंथुआदिक जीव ऊपजइ नही तिम करीइ। वरसातमार्हि कळलि (फूलि) न वलि तिम करीइ। भावि तिम नाखीइ तु आशातना लागि॥

पूजा करता भणीइ नही, बात न कीजि, छणीइ नही। एकाग्र चित पूजा ऊपरि राखीइं। सूकडि केसर कर्पूर लेई नवांगि सृष्टि पूजा कीजि। पग २ जानु ४ हाथ ६ षभा ८ मस्तक ९। पछइ आभरण चडावीइ। पछि सृष्टि फूल चडावीइ। ते फूल अखंडित अम्लान काप्यां नही, जीवे खाधां नही, सर्व जाति, रूडि वस्त्रि धाली रूडे परि आण्या, एहवा चडावीइ। प्रथम मूलनायक पूजीइं। मूलनायकनि विशेष पूजा कीजि। जउ पहिलू विशेष

पूजा कीधी हुइ तु आपण न ऊतारीइं । ते ऊपरि आपण करीइं । जउ घणी वेला थई हुइ तु फूल करमाणा हुइ तु ऊतारे विशेष पूजा करीइं ॥

पछि सृष्टि सृष्टि सघली पासानी प्रतिमा पूजीइ । पछि बाहिरला चउमुखनी पूजीइ । पछि मंगल चैत्य पूजीइ । प्रतिमानि मुखि सूकडि काई न लगाडीइं । रूडि आसनि बइसी प्रतिमा पूजीइं ॥

हवि अग्रपूजा लिखीइ छइ । दीवु जगन्नाथनि जिमणि पासि मेहतीइ । नैवेद्य धान धृत पकवान फल पाणीइ भरिउ भाजन जगन्नाथ नइ सामुं ढोईइ । अने चोखाना त्रिणि पुंज आगलि करीइ जगन्नाथनि डावि पासि धूप ऊखेवीइ । पछि आरती मंगलेवु घीनु करीइ । पछि गीतबाजित्र वाजति सृष्टि वार ३ आरती ऊतारीइ, मंगलेवु वार ३ ऊतारीइ । पछि चमर ढालीइ । पछि भंडारि मूकीइं ॥ जेतली वेला देहरामां रहीइ ते निमित्त भंडारि मूकीइ । नालिकेर ढोईइं । चंदनना हाथा दीजीइ । तुंदुलना मंगल आलेखीइ ।

हवइ भावपूजानि अवसरि त्रीजी निसीही कहीइ । रंगमंडपि आवी चैत्यवन्दन कीजि । घणी वेला धोतीयां रखीइ नही । राखीइ तु दोष लागि ॥

एतला पूजाना उपस्कर जोईइ : देहरासर हाथ डउढ उचंड मांडीइ । चंद्रओ ऊपरि बांधीइ । कलस १ धूपधाणुं १ बाजोठ १ डंडासणउं १ काजाउद्धरणी १ वली १ कलसीउ १ पाणी ढोवानि सीप १ सूकडि ऊसारवा वासकुंपी १ वास घालवा डाबडी १ केसर घालवा डाबडी १ अगस्ती डाबडी १ वास घालवानी डाबडी (?) कपूर घालवा थांट १ पुंजणी १ वालाकुची १ डाबडु १ आंगलूहणा घालवा डाबडो १ चोखा घालवानि दोडीउ १ निर्माल घालवानि डालरि १ तालजोडुं १ दीवु १ पीतलनु, आरती १ मंगलेवु १ पाटलु १ बिसवानु, दीवी १ लाकडानी तथा पीतलनी, सूकडिनुं गाठीउ उरसीउ १ चंगेरी १ फूल घालवानी । धोतीआ जोडुं १ मुखकोश १ पडे धोतीउ १ आंगलूहणा ४ गज साढा त्रीणिना, हाथलूहणुं १ गज १ एकनूं अनि पषालत्तूहणुं गज च्यारिन् ब्राबानु घडु १ पाणी घालवानि, गलणुं १ गलवानि, गलणुं १ ने वानि । छत्र १ चामर २ ।

पांच प्रकारे पूजा - सूकडि केसर १ फूल २ आषे ३ दीवु ४ धूप ५ ॥ आठ प्रकारे पूजा - सूकडि केसर १ फूल २ दीवु ३ आषे ४ नैवेद्य

५ फल ६ पाणी ७ धूप ८ ॥ सतरे प्रकारे पूजा - न्हवहण विलहेवण १,  
चक्षु २ वा वस्त्र, छूटां फूल ३, फूलनी माला ४, वर्णक फूल ५, कर्पूर  
चूर्ण ६, आभरण ७, फूलहरुं ८, फूलपगर ९, आरती-मंगलेवु १०, दीवु  
११, धूप १२, नैवेद्य १३, फल १४, गीत १५, नृत्य १६, वाजित्र १७ ॥  
एकवीस प्रकारे पूजा - पषाल १ विलेपन २ वस्त्रयुगल ३ वास ४ फूल  
५ आभरण ६ धूप ७ दीप ८ फल ९ अक्षत १० नैवेद्य ११ पानीय १२  
पांने १३ सोपारी १४ छत्र १५ चामर १६ वाजित्र १७ गीत १८ नाटक १९  
स्तवस्तुति २० कोशवृद्धि २१ ॥

### शब्दकोश

अंधोलि	स्थान
पुंजीनदि	पुंजीने-जीवरक्षा थाय तेम साफ करीने
भुई	भोय-भूमि
उत्तरासंगे	ऊपरणु-खेस वस्त्र
किरिडिआं	जर्जरित के करेक्लियां वाळां (?)
साध्या	सांधेलां
आंतरी	वस्त्रने छेडे थोडाक तार काढीने छेडा काढवा ते
पूजाव्यतिरेक	पूजा सिवायनु
एकसाडिड	एकवडो (खेस)
उपस्कर	सामग्री
सृष्टि	सृष्टिकम एटले आपणे डाबेथी जमण जवुं ते, प्रभुने जमणेथी डाबे.
चिहुं रूपे	चार 'मुखे - चौमुख रूपे
मुखकोश	मोढा पर बांधवानो रुमाल
सूकडि	सुखड-चंदन
जूजूई	जुदी जुदी
ऊसारि	काढी, राखी
आठपुडु	रुमालना आठ पड(करवा)

निर्मात्य/निर्माल	गई कालनी पूजा-वासी पूजाने उतारे
यतना	जीवहिंसा न थाय तेनी चीकट
पषाल	प्रक्षालन
पनालीइ	प्रणाळ-नीकबाळो
वालाकूची	सुगंधी वालानी जूडी
आंगलूहणा	अंग लूछवाना बख्त
सुहाली भेरवना	—
सप्तर/सपर	सुंदरसुपेरे
निरवद्य भूमिका	निर्जीव धरती
उलंडाइ	ओळंगाय
कुथुआ	झीणी जीवात
फूल-	फूग
भावि	जाणी बूझीने
आशातना	दोष/पाप
भणीइ	भणीए/बोलीए
घणीइ	खोतरीए-खंजवाळीए
सृष्टिपूजा	प्रभुने जमणेथी डाबे पूजा
पासानी	पाषाणनी(?)
मंगलेबु	मंगलदीवो
धंडारि मूँकीइं	ऐसा मूकवा
हाथा	हाथना थापा
तुंदुल	चोखा-अक्षत
डालरि	वासण विशेष(?) सूडली-टोपली-(म.गु.श.को.)
तालजोडु	पंखो(?)
गाठीउ	टुकडो
उरसीउ	घसवानो पत्थर-ओरसियो
थांट	-यट (तासक)(?)
पषाल लूंहणुं-	भोंयलूछणुं
नेवानि	—